

Aditya Hrudayam In Bengali

Aditya Hrudayam Bengali Lyrics (Text)

Aditya Hrudayam Bengali Script

রচন: অগস্ত্য ঋষি

শ্লোক

নমস্‌সবিত্রে জগদেক চক্ষুসে
জগৎপ্রসূতি স্থিতি নাশহেতবে
ত্রীময়ায় ত্রিগুণায় ধারণে
বিরিঞ্চি নারায়ণ শংকরাঙ্কনে

ততো যুদ্ধ পরিশ্রান্তঃ সমরে চিংতয়া স্থিতম |
রাবণং চাগ্রতো দুষ্টা যুদ্ধায় সমুপস্থিতম || 1 ||

দৈবতৈশ্চ সমাগল্য দ্রষ্টুমভ্যাগতো রণম |
উপগল্যা ব্রবীড়ামম অগস্ত্যয়া ভগবান ঋষিঃ || 2 ||

রাম রাম মহাবাহো শূণু গৃহয়ং সনাতনম |
যেন সর্বানরীন বৎস সমরে বিজয়িষ্যসি || 3 ||

আদিংয় হৃদয়ং পুংয়ং সর্বশত্রু বিনাশনম |
জয়াবহং জপেন্নিঃয়ম অক্ষয়ং পরমং শিবম || 4 ||

সর্বমংগল মাজ্জল্যং সর্ব পাপ প্রণাশনম |
চিংতাশোক প্রশমনম আয়ুর্বর্ধন মুত্তমম || 5 ||

রশ্মিমংতং সমুদয়ন্তং দেবাসুর নমস্কৃতম |
পূজয়স্ব বিবস্বন্তং ভাস্করং ভুবনেশ্বরম || 6 ||

সর্বদেবান্নকো হেয়শ তেজস্বী রশ্মিভাবনঃ |
এশ দেবাসুর গণান লোকান পাতি গভস্তিভিঃ || 7 ||

এশ ব্রহ্মা চ বিষ্ণুশ্চ শিবঃ স্কন্দঃ প্রজাপতিঃ |
মহেন্দ্রো ধনদঃ কালো যমঃ সোমো হযপাং পতিঃ || 8 ||

পিতরো বসবঃ সাশ্বা হযশ্বিনৌ মনুতো মনুঃ |
বাসুর্বহ্নিঃ প্রজাপ্রাণঃ ঋতুকর্তা প্রভাকরঃ || 9 ||

আদিংয়ঃ সবিতা সূর্যঃ খগঃ পৃষা গভস্তিমান |
সুবর্ণসদৃশো ভানুঃ হিরণ্যরেতা দিবাকরঃ || 10 ||

হরিদশ্বঃ সহস্রার্চিঃ সপ্তসপ্তি-মরীচিমান |
তিমিরোন্মথনঃ শংভুঃ স্বষ্টা মার্তাওকোঽংশুমান || 11 ||

हिरण्यगर्तः शिशिरः तपनो भास्वरौ रविः |
अग्निगर्भो॒दितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः || 12 ||

बेयामनाथ स्त्रमोभेदी ऋग्यजुःसाम-पारगः |
घनावृष्टि रपां मित्रो बिलम्बवीथी प्लवङ्गमः || 13 ||

आतपी मंडली मृग्युः पिङ्गलः सर्वतापनः |
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभबोद्धवः || 14 ||

नक्षत्र ग्रह ताराणाम अषिपो विश्वभावनः |
तेजसामपि तेजस्यै द्वादशान्नन-नमो॒स्तु ते || 15 ||

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायद्रये नमः |
श्र्यातिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः || 16 ||

जयाय जयभद्राय हर्याय नमो नमः |
नमो नमः सहस्रांशो आदिंयाय नमो नमः || 17 ||

नम उग्राय वीराय सारणाय नमो नमः |
नमः पद्मप्रबोधाय मार्ताण्डाय नमो नमः || 18 ||

ब्रह्मेशानाम्युतेशाय सूर्यायादिंय-वर्चसे |
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः || 19 ||

तमोन्नाय हिमन्नाय शक्रन्नाया मितान्नाने |
कृतन्नन्नाय देवाय श्र्यातिषां पतये नमः || 2० ||

तप्त चामीकराभाय बह्वये विश्वकर्मणे |
नमस्तमो॒ति निन्नाय रुचये लोकसाम्निगे || 21 ||

नाशयंशस वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः |
पामंशस तपंशस वर्षंशस गभस्तिभिः || 22 ||

एष सुष्रेषु जागर्ति भूतेषु परिनिर्षितः |
एष एवाग्निहेत्रं च फलं चैवाग्नि होत्रिणाम् || 23 ||

वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च |
यानि क्ंयानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः || 24 ||

फलप्रतिः

एन मापंशु कुञ्जेषु काष्ठारेषु भयेषु च |
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन-नावशीदति राघव || 25 ||

पूजयस्त्रैः मेकाग्रो देवदेवः जगत्पतिम् ।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा मुद्गेषु विजयिष्यसि ॥ 26 ॥

अस्मिन् ऋषे महाबाहो रावणं ह्यं वधिष्यसि ।
एवमुक्त्वा तदागन्त्या जगाम च यथागतम् ॥ 27 ॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजाः नष्टशोकोऽभवत्-तदा ।
धारयामास सूत्रीतो राघवः प्रयत्नवान् ॥ 28 ॥

आदिपत्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिरात्रं शुचिर्भूत्वा धनुर्दाय वीरवान् ॥ 29 ॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टान्ना मुद्गाय समुपागतम् ।
सर्वयज्ञेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत् ॥ 30 ॥

अथ रविरवदन-निर्रीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
निशिचरपति संश्रयं विदिश्या सुरगण मन्थगतो वचस्वरेति ॥ 31 ॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाण्डे मुद्गकाण्डे पञ्चाधिकं शततमं सर्गः ॥